रुहानी बच्चों प्रति रुहानी शिव भगवानोवाच्य, बाप को तो बाप ही कहा जाता है। जन्म जन्मान्तर लौकिक बाप से पैदा होते ही है और बाबा, बाबा कहते ही है। जन्म जन्मान्तर हो तुम कुखवंशावली और अब तुम हो मुखवंशावली। सतयुग में मुखवंशावली नही कहलाये जाते। यह एक ही संगम है जब कि तुम शिव बाबा को जान गये हो कि हम शिव बाबा के ब्रहा दवारा मुखवंशावली है। बाबा नें मुख से कहा कि तुम हमारे बच्चे हो। मै तुम्हारा रुहानी बाप हूं। तुम सब रुहे हो। यह नालेज अब तुम्हारे बिना कोई समझ नही सकते। तुम सतयुग से लेकर कुखवंशावली बनते हो। परन्तु पवित्र कुखवंशावली। और फिर जब से रावण राज्य आया है तो कुखवंशावली बने हो। वो है पवित्र कुखवंशावली। पवित्रता का वर्सा आधा कल्प के लिये लेते हो। इन सब बातों को याद नही करते रहेंगें तो इतना उंमग खुशी में नही आवेगें। बच्चों को बाप को याद कर पावन सतोप्रधान बनना है। सतोप्रधान को पावन तमोप्रधान को पतित कहा जाता है। मनुष्य गाते भी रहते है कि पतित पावन सीता राम..वो तो ऐसे ही कह देते है कि पतित पावन...नां खुद को पतित समझते है, नां यथार्थ रीती पावन बनाने वाले को जानते है। तुम समझते हो यह बिलकुल ही पत्थर बुधी है। भलें कितने भी बड़े-2 महात्मा लोग है कितनी धुन लगाते है पतित पावन...समझते कुछ नही। अभी तुम बच्चे यथार्थ रीती जानते हो कि यह पतित तमोप्रधान दुनिया है। इनको कलियुग कहा जाता है। सतयुग भी था। जरा बात भी किसीकी बुधी में नही आती है। अभी तुम्हारे मुख से ऐसे नही निकलेंगे कि पतित पावन...तुम जानते हो कि मनुष्य तो बिगर अर्थ गाते है और डांस करते रहते है। बाप कितने गुप्त है। जिसको याद करने में भी कितनी मेहनत लगती है। बाप भी समझते है तुम भी समझते हो। आगे कोई को पता नही था कि हम आत्मा है। जो फिर पूरे 84 जन्म लेते है वो ही जानते है। समझते है उनकी बुधी में ही बैठेगा। बाकी कई तो सिर्फ बाहर से ही चित्र देख कर बोलते है इन्होंनें तो कृष्ण के पावं में नर्क दिखाया है। बस सिर्फ चित्र देखा और चले जाते है। कुछ भी समझते नही। तो समझा जाता है इस घरानें का है नही। फिर भी ऐसे-2 मनुष्य आगे चल कर समझेंगें जब कि तुम्हारा प्रभाव निकलेगा। राजधानी स्थापन होती है सो तो बुधी को पाते रहेंगें। तुम देखते हो वृधी होती रहती है। इसलिये बाबा मकान भी बढ़ाते रहते है। बच्चें ता बहुत वृधी को पावेगें। राजधानी स्थापन होने में टाईम तो लगता है नां। मूल बात है ही एक कि हमको सतोप्रधान बननें लिये पावन बनने के लिये बाप को याद करना है। अपनी जांच रखनी चाहिये सारा दिन में हम कितना समय बाप को रुची से याद करते है। बाबा कितनी सहज युक्ति बताते है। अक्षर ही है सिर्फ मनमनाभव। भल यह गीता में अक्षर है परन्तु अर्थ कुछ नही समझते है। हजारों लाखों मनुष्य गीता आद सुनते है, समझते कुछ भी नही। हम भी गीता वे भागवत आद-2 सुनते थे, हरएक का अपना-2 शास्त्र है नां। हर एक धर्म वाले की अपने धर्म शास्त्र से प्रीत रहती है। यहां (भारत) गीता पढ़ते है। क्राईस्ट कब आया कहां गया क्या हुआ जानते थोड़ेई है। इन्होंनें तो अपना धर्म स्थापन किया वो ही वृधी को पाता रहता है। यह कोई कमाल की बात हुई क्या? अब समझो यह ब्राहम्ण धर्म स्थापन करते है कमाल की क्या बात है? शिव बाबा नां होते तो वापस जाने की युक्ती कौन बताते!? वो धर्म स्थापक तो वापस जाने की युक्ती नही बताते। उनकी महिमा कुछ भी नही है। ईब्राहिम अथवा बौधी आये महिमा कुछ भी नही। और भी इनके धर्म की आत्मायें मुक्ति में बैठी थी। वो फिर धर्म स्थापन करते है तो वो सब आत्मायें आती जाती है। बाकी मोक्ष आद की बात तो है नही। चक्र में तो सबको आना ही है। फिर जब दुःख होता है तो गाड फादर को पुकारते है। धर्म स्थापक को कोई गाड फादर नही कहेंगें। वो तो एक ही है। क्यों कि फादर से वर्सा मिलता है। क्राईस्ट कोई वर्सा नही देते है। नां मुक्ति देते है। यह कितनी समझने की और धारणा करने की बाते है। बाप जब समझाते है तब बुधी में प्रकाश होता है। आत्मा को प्रकाश होता है। बाबा ज्ञान का सागर है हमारे में भी ज्ञान सुन बुधी में बहुत प्रकाश आया हुआ है।

अभी तुमको सृष्टी की आद मध्य अन्त का सारा ज्ञान है। ऊंच तें ऊंच बाबा। फिर ऊंच तें ऊंच हम आत्मायें कहाँ की रहवासी है वो तुम जानते हो। दुनिया में कोई भी नही जानते। तुम जानते हो बाबा ज्ञान का सागर है। वो तो सिर्फ गाते है। ज्ञान का सागर है तो जरूर सुना कर गये है। शिव जयन्ती भी मनाते है। परन्तु कब आया था यह किसीको पता नही है। तुम जानते हो शिव बाबा आज से 5000 वर्ष पहले होकर गये है। राजयोग सिखाकर भारत को स्वराज्य दिया था। फिर इन लक्ष्मी नारायण का राज्य खड़ा हो गया और कोई धर्म नही था। यह तुम जानते हो। यह तुम जानती हो इतने बड़ें-2 विदवान पण्डित शंकराचार्य आद भी कुछ नही जानते है। कितनी उनकी महिमा है। तुम्हारे आगें तो कुछ भी नही जानते। भल कितने भी बड़ें-2 शैजायें महाराजायें है तुम अभी समझते हो वो (ल ना) स्वर्ग के महाराजा महारानी थे। यहां तो सभी महाराजा महारानी प्रैजीडेन्ट आद सब नर्क वासी है। मनुष्य मात्र सब नर्क वासी है। स्वर्ग वासी वो शान्ती धामवासी कौन है उनको पता ही नही है। यह भी नही जानते हक हम नर्क में है। स्वर्ग क्या चीज है कुछ पता नही। अभी आत्मा का तीसरा नेत्र ज्ञान का खुला है। आत्मा नें बाप को जाना, है। आत्मा को बाप से सृष्टी की आद मध्य अन्त का ज्ञान मिला है। धारणा तो नम्बरवार होती है। कोई जास्ती धारणा करते है कोई कम। पुरुषार्थ तो करते रहेंगें नां। वो स्कूल जो होते है वो गांव में होते है फिर बड़ें-2 इम्तिहान फिर कहीं जाते है पास करनें के लिये। यह तो एक ही स्कूल है। आहस्ते-2 यह स्कूल खुलते जाते है। तुम लिखते हो सच्ची गीता पाठशाला तो भी कोई समझते नही है। तुम सच्ची गीता पाठशाला लिखते हो तो जरूर वो झूठी ठहरी। यहाँ तो सच्चा बाप आकर खुद पढ़ाते है। वो सब झूटे किताब बना कर पढ़ते रहते है। ऐम आब्जैक्ट कुछ भी नही। यहां तो ऐम आब्जैक्ट है। तुम कह सकते हो यह है हमारी ऐमआब्जैक्ट बहुत सुनेंगें। प्रजा तो बननी है नां। राजा रानी जो बनते है उनकी माला बनी हुई है। माला 8, की भी है तो 108 की भी है, तो 16108 की भी है। इतनी बड़ी माला कैसे उठा सकेंगें? इसलिये ही 108 की छोटी बनाई है। 108 तो बहुत कम है आधा कल्प में वृधी तो होती होगी नां। राजाओं से भी वृधी तो होगी नां। परन्तु है तो सब पवित्र। भले पहले एक बच्चे का साक्षात्कार होता है। परन्तु रावण राज्य तो नही है ना। विकार की बात ही नही रहती। रावण राज्य शुरू होता है ही है दवापुर से। ऐसे नही कि वो 14 है तो पतित बनते होंगें नही। तुमको समझानें की पुआईन्टस बहुत मिलती है। आधा कल्प आधा है। राम राज्य में भी पवित्र रहते है। साक्षात्कार करके दो का भी हो वो तीन का भी हो क्यों नहीं सकि एक बच्चा ऐक बच्ची होते ही है नां। करके तीन वा चार भी हो गये परन्तु विकार की तो बात ही नही है नां। बीलो वहां है ही योग बल। रावण राज्य शुरू ही दवापर आदसें होता है। त्रेता का अन्त और दवापुर की आद कोई कुल्भातिम संगम युग नही होता। वो तो पुरुषोतम सें कनिष्ट होंनें का युग है। उनका गायन नही है। राम राज्य में रावण राज्य की बात ही हो नही सकती है। दुःख शुरू होता ही है रावण राज्य के बाद। वहां तो अथाह सुख है। यह है ही सुख और दुःख का खेल। उसमें सें सुख बहुत है। पीछे-2 आहस्ते-2 करके दुःख शुरू होता है। कलायें कम होती है नां। जब बाप आते है तो मनुष्यों की कोई भी कला नही रह जाती है। जो भी आतें है पटि बजानें वो भी थोड़े समय के लिये। जानवरों में भी कोई की आयु छोटी कोई की बड़ी होती है नां। दीपमाला में रात को जनमते है, मच्छर, सवेरे देखेंगें तो ढेर मरे पड़े होंगें। बत्ती जलनें समय जन्म हुआ और फिर रात को खत्म हो जाते है। ताक मनुष्यों का भी ऐसे ही है। यह सब बातें बाप ही बैठ समझाते है। इनको धारण कर और कराना है। प्रैक्टिस होगी तो सब पुआईन्टस देते रहेंगें। प्रदर्शनी में जाकर फिर अपनें ही धन्धें में चलें जाते है तो वो नशा टूट जावेगा। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो बाकी 9, 10 वर्ष है यह सब खत्म हो जावेगा। जो सतयुग में राज्य था उसी ही अभी स्थापन हो रहा है। हम उनके राज्य में थे फिर सतोप्रधान रजो तमो में आये है। 84 जन्म लेकर। यह सारा चक्र

चुगी में बैठ गया है। फिर तुम संस्कार ले जावेंगे। यह ज्ञान प्रायःलोप ही हो जाता है। अभी तुमको ज्ञान मिलता है जिससे ही सदगती हो जावेगी। फिर भक्ति के धक्के खाने की भी जरूर त नही। मनुष्य कितने घोर अन्धेरे में है। कुम्भ करण की नींद में सोये पड़े है। दिखाते है कोई शहर में 6 मास दिन 6मास रात होती है। फिर यह सच है यां झूठ है यह कुछ कह नही सकते। ऐसा कोई मनुष्य देख कर आया नही है जो आकर सुनावें। ऐसे हो कैसे सकते है? चन्द्रमा तो चक्र लगाते रहते है नां। सृष्टी कोई वहां खडी हो जाती है क्या? मनुष्यों नें तो क्या-2 बैठ लिखा है। मनुष्य सृष्टी तो चली ही आती है। 5000वर्ष का चक्र है। इसमें पुरानी चीज हो ही कैसे सकती। ऐसे ही दुक्का मार देते है कि पुरानी चीज है। बाबा तो व्यापार भी करते थे नां। बर्तनों को काला कर रख देते थे। फिर कहते थे बहुत पुरानी चीज है। द दाम बहुत ले लेते थे। पुरानी पिक्चर्स होती थी। मुसलमान तो अभी होकर गये है उनको कितना पुराना कहेंगे। 5,6सौ के हुये लाखों वर्षों की बात कहा से आई। शास्त्रों में तो सब गपोड़े ही गपोड़े है। यह ड्रामा में फिर भी ऐसे ही होना है। कहते है व्यास भगवान नें यह लिखा है। कैसे स्टोरी बैठ लिखी है। सची वार्ता तो कुछ भी नही है। किसीको कहें कि यह भक्ति मार्ग के शास्त्र दुर्गती में लेंजानें वाले है तो पहले तो गुस्सा लगेगा। फिरतुम शान्ती से बैठ समझाते हो तो कहते है बात तो ठीक है। बड़े-2 विद्वान तो नही आते है। उनका तो धन्धा है। शंकराचार्य है उनका हेड। नाम भी है शंकराचार्य। अब शंकर तो आचार्य नही है। शिवाचार्य है। उन्होंनें फिर अपना नाम शंकराचार्य रख दिया है। शिव के बाद शंकर को मानते है। क्यों कि शिव का भी बहुत पटि नही शंकर का भी बहुत पटि नही। शिवआचार्य तो है निराकार। वो तो कुछ पढ़ा नां सके। वो तो कितने शास्त्र पढ़ते है। शंकर भीसुक्ष्म वतन वासी। वो तो बिचारे कुछ जानते ही नही। उनको तो यह ज्ञान ही नही। विष्णु बिचारे में भी यह ज्ञान है नही। उनके लिये बिचारे कहते है। ब्रह्मा को बिचारा कहेंगे क्या? यह तो सृष्टी की आद मध्य अन्त को जानते है। तो फर्क हो गया नां। तो तुमको कितना नशा रहना चाहिये। और सब है गरीब। तुम ब्राह्मण ही शाहुकार हो। तुम हो ईश्वरिय परिवार। तुम शिव बाबा के बच्चे हो। फिर ब्रह्मा के साकार में बननें से पोत्रे पोत्रियां हो। पढ़ती आत्मा है पोत्र पोत्रियों के रूप में। पोत्रे पोत्रियां शिव बाबा कहेंगें। यह (ब्रह्मा) तो बच्चे बच्ची कहेंगे। तो यह कितनी अच्छी समझनें की बाते है। और इसमें विचार सागर मथन करना होता है। यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का भोजन। इनको सिमरण करना है। इतनें सबको थोड़ेई तीर लगेगा। कोई समझेंगे बात तो बरोबर ठीक है। एक निराकार को ही सब याद करते है। हम साकार में कोई की भी म महिमा नही करते है। लक्ष्मी नारायण की भी अभी महिमा नही कर सकते। इनको बनानें वाला तो है शिव। बाबा है नां। वो नो होते तो तुम थोड़ेई बनते। दुनिया तो घोर अन्धेरे में है। तुमको अब निश्चय है हम 84का चक्र लगा कर अब घर जाते है। यह बात याद करलों तो भी अहोसौभाग्य। बच्चे स्कूल में पढ़ते है। ऐसे थोड़ेई होता है कि मित्र सम्बन्धियों आद के पास नही जाते। तुम भी याद एक को ही करते हो। बाकी जानते हो यह सब शरीर के ही सम्बन्धी है। निराकार रूप से हम भाई-2 है। बाप से वर्सा ले रहे है। अभी हमको वापस जाना है। मित्र सम्बन्धी आद है परन्तु उनसे कनेक्शन नही है। वो तो टूट जाता है। लव एक बाप से ही हो जाता है। बाप और वर्सा। कितना सहज है। बाप सिर्फ कहते है मुझे और वर्से को ही याद करो। ब्रह्मा द्वारा ही कहेंगे। विष्णु को कोई प्रजापिता थोड़ेई कहते है। तो जरूर पतित तन में ही आवेंगे। पावन में थोड़ेई आवेंगे। सुक्ष्म वतन में आवेंगे क्या? यह पतित से पावन बनना है। ज्ञान से फरिश्ता बनते है। यह बातें सुननें में तुमको कितना मजा आता है। मैनर्स भी अच्छे चाहिये। बोलना करना बहुत मीठा होना चाहिये। बहुतों का बोल बहुत कड़ा रहता है। ऐसे वचन निकलते है जैसे बन्दरों के निकलते है। धीरे-2 बन्दर पना छूट देवतापना आ जावेगा। हर एक को अपनें को चैक करना

करना है। हमनें सारे दिन में क्या किया? कुदृष्टी तो नही गई? तोवा-2 भरनी चाहिये। बाबा अवज्ञा करता हूँ फिर कव नही करूंगा। अपनें ही अन्दर में बाप से बैठ कर बातें करो। बाबा हम फिर ऐसा नही करेंगे। बाप के साथ धर्मराज तो है ही। डंडे तो खाने ही पड़ेंगे। अपनी अवस्था की पूरी जांच करनी चाहिये कि सारा दिन भर क्या किया? मनुष्य अपना पोतामेल रात को देखते है। यह भी इस व्यापार है सारे दिन का पोतामेल देखना चाहिये। कितनों को रस्ता वताया? कोई विकर्म तो नही किया? रजिस्टर कहां तक खराब करते रहेंगे। और ही सौना विकर्म हो जावेगा। बाबा समझाते तो बहुत है। भिन्न-2 रीती से। अच्छा मीठे-2 सपूत दैवी गुण धारण करने वाले आज्ञाकारी सपूत बच्चों को याद प्यार ओम

29-1-67:-का प्रातःक्लासः-नां बतानें से और ही सौना हो जाता है। विकर्मों की वृधी हो जाती है। झट लिखना चाहिये बाबा आज हमसें यह अकर्तव्य कर्म हो गया। कई तो तीन-2 चार-2 मास पत्र ही नही लिखते है। और अपनें को अनन्यबच्चा समझते है। 3,4 मास पत्र ही नही लिखेंगें तो मांबाप समझेंगे पता नही बिमार हो गया, मर गया? मर जाते है तो खलास। सेन्टर पर भी नही आते है। बच्चों को बहुत-2 रायल बनना है। तुम ईश्वरिय सन्तान हो नां। मुख सें सदेव रत्न निकालो। कब भी कुवचन नां निकालो। यहां निकलनें चाहिये रत्न। सारी दुनिया में सबके मुख सें गन्द ही निकलता है। सबसें बड़ा गन्द सन्यासियों के मुख सें निकलता है जो कहते है कि परमात्मा सर्वव्यापी है। कितनी गाली देते है भगवान को कच्छ, मच्छ अवतार कह देते है। कितना गन्द निकालते है। इसलिये ही उनको हरणा कश्यप आद नाम दे दिया है। मुख सें कब कड़ा अक्षर नां निकले। बहुत रायल होनाचाहिये। तुम हो ईश्वरिय सन्तान। शिव वंशी ब्रह्मा कुमार कुमारियां। वहां तो जरूर विष्णुवंशी ही कहेंगे। यहां तुम हो शिववंशी ब्रह्माकुमार कुमारियां। शिववंशी तो सब आत्मायें है। फिर ब्रह्मा कुमार कुमारियों के अलग-2 नाम है। आत्मा को तो आत्मा ही कहते है। शरीर का नाम बदलते है। अच्छा बाप दादा का याद प्यार गुड़ मर्निंग ओम

29-1-67:-प्रातःक्लासः— सदेव नई तो रह नही सकती। चक्र फिरना है। तो नीचे जरूर उतरेंगे। हर एक चीज नई फिर पुरानी जरूर होती है। मनुष्य तो जैसे तवाईयों मिसल जो आता है बकते रहते है। बिगर अर्थ बकनें वाले को चरिया कहा जाता है। राम की सिता चुराई गई, राम नें बन्दरों की सैना ली, यह सब चरियाई बनाई है। बाप आकर गुलगुल बनाते है। कहते है व्यास भगवान नें शास्त्र बनाये है। तो वो भी ऐसा चरिया निकला जिसनें इतनी चरियाई बैठ लिखी है। अभी इन बातों पर बच्छुर लगता है। अच्छा ओम शान्ती

मुरली की पुआईन्टः-अभी तुम समझते हो भक्ति मार्ग क्या है। कृष्ण के भक्त कृष्ण के आगें धूप जगावें तो राम के भक्त राम का नाक बन्द कर देते है। कितने चरिये है। कमाल की है नां। शास्त्र तो ऐसे बनाये है जिनमें झूठ ही झूठ सच की रती नही। झूठ को ऐसे पकड़ बैठते है जो छोड़ते ही नही। किया व्यास नें बैठ बनाया। मनुष्यों का तो बेड़ा ही गर्क कर दिया है। सीढ़ी उतरते ही आये है। सबकी दुर्गती हो गई है। बाप आकर सदगती करते है। यह भी समझते नही कि रावण नें पूरी दुर्गती करी है। भक्ति मार्ग वाले है ही चरये। चरियों को सच बतायें तो भी बिगर पड़ते है। सच कहने पर भी मिर्ची लगती है। हम कहते है यह बाप समझाते है तो इस पर भी मिर्ची लगती है। अब तुम जानते हो यह गुरू गुसाई बड़े ऐसे है। कितनी पुस्तकें बैठ बनाई है जिनमें ग्लानी ही लिखी हुई है। कितना रौला मचा दिया है।

31-1-67:-रात्री क्लासः- याद की यात्रा से बाप को याद करना है। जाना है फिर आना है। बच्चों को जाना है फिर आना है पार्ट बजानें के लिये। घर को और बादशाही को याद करना है। शरीर होते कर्म भी तो करना ही है। जब तक यहां है कर्म भी करना है। जो भी मिले उनको घर का और राजधानी का रस्ता बताना है। घर को और राजधानी को याद करना और शरीर निर्वाह अर्थ काम करना। तुम बच्चे ही जानते हो अभी हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बन सतोप्रधान दुनिया का मालिक बनना है। गुड नाईट बच्चों को